Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

भारतीय लोक चित्रकला और उसका वर्तमान परिप्रेक्ष्य

Arjun Kumar Singh and Vinit Bihari

Chitkara Design School, Chitkara University, Punjab, India

संक्षेपिका

"कला" एक ऐसी बहुमूल्य सम्पत्ति है जो होती तो सभी के पास है, पर इसका आभास हर किसी को नहीं होता है। यदि आप कला को विशेष समय देते हैं और इसके साथ नियमित रूप से कुछ वक्त बीताते हैं तो निश्चित् ही आपकी कला आपको बहुत ऊपर तक लेकर जाएगी। कला में आपको शीर्ष स्थान तक पहुँचाने का विशेष सामर्थ्य होता है। मानवों के बीच सहज फूटने वाली कला, लोक कला कही जाती है और इसमें परम्परा का प्रवाह होता है। यह मानव की चेतना को अभिव्यक्त और विकसित करने की माध्यम भी रही है। हमारे लोक चित्रकारों ने हमारी परम्परा और विश्वास को विविधतापूर्ण रूप और रंगों से मूर्त रूप दिया है तथा हमारे मन और तन की दुनिया को सरस व सृजनात्मक बनाया है। लोक चित्रकला आज भी प्रभावी है, यह शोध–पत्र लोक चित्रकला के विभिन्न संदर्भों की पड़ताल आज के परिपेक्ष्य में करता है।

बीज शब्दः लोक चित्रकला, मधुबनी कला, वर्ली चित्रकला, लोक चित्रकला

परिचय

कला ही है जिसमें मानव मन में संवेदनाएँ उभारने, प्रवृत्तियों को ढालने तथा चिंतन को मोड़ने, अभिरुचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता है। मनोरंजन, सौन्दर्य, प्रवाह, उल्लास न जाने कितने तत्त्वों से यह भरपूर है, जिसमें मानवीयता को सम्मोहित करने की शक्ति है। यह अपना जादू तत्काल दिखाती है और व्यक्ति को बदलने में, लोहा पिघलाकर पानी बना देने वाली भट्टी की तरह मनोवृत्तियों में भारी रुपान्तरण प्रस्तुत कर सकती है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के मुख से निकला "कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है" तो प्लेटो ने कहा "दृ श्यकला सत्य की अनुकृति के अनुकृति है।" टालस्टापय के शब्दों में "अपने भावों की क्रिया रेखा, रंग, ध्वनि या शब्द द्वारा इस प्रकार अभिव्युक्ति करना कि उसे देखने या सुनने में भी वही भाव उत्पन्न हो जाए कला है।" हृदय की गइराईयों से निकली अनुभूति जब कला का रूप लेती है, कलाकार का अन्तर्मन मानो मूर्त ले उठता है चाहे लेखनी उसका माध्यम हो या रंगों से भीगी तूलिका या सुरों की पुकार या वाद्यों की झंकार। कला ही आत्मिक शान्ति का माध्यम है। यह कठिन तपस्या है, साधना है। इसी के माध्य में से कलाकार सुनहरी और इन्द्र धनुषी आत्मा से स्वप्निल विचारों को साकार रूप देता है[1]।

कलाओं में कला, श्रेष्ठय कला, वह है चित्रकला। मनुष्य स्वभाव से ही अनुकरण की प्रवृत्ति रखता है। जैसा देखता है उसी प्रकार अपने को ढालने का प्रयत्न करता है। यही उसकी आत्माहभिव्यंवजना है। अपनी रंगों से भरी तूलिका से चित्रकार जन भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है तो दर्शक हतप्रभ रह जाता है। पाषाण युग से ही जो चित्र पारितोषक होते रहे हैं ये मात्र एक विधा नहीं, अपितू ये मानवता के विकास का एक निश्चित् सोपान प्रस्तुत करते हैं। चित्रों के माध्यम से आखेट करने वाले आदिम मानव ने न केवल अपने संवेगों को बल्कि रहस्यमय प्रवृत्ति और जंगल के खूंखार प्रवासियों के विरुद्ध अपने अस्तित्व के लिए किये गये संघर्ष को भी

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

अभिव्यक्त किया है और लोक चित्रकला मानव के विभिन्न प्रसंगों और परिस्थितियों का गवाह रही है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है और लोक रूप–रंगों को चित्रकला माध्यम से अभिव्यक्त करती है। यह मानव की श्रेष्ठ सृजनात्मक अभिव्यक्ति है। लोक का अर्थ 'देस' होता, इस प्रकार यह सम्पूर्ण मानवीय संभावनाओं की उपस्थिति होती है।

चित्र –1,पदम श्री सीता देवी, कोहबर (मधुबनी चित्रकला), 2016

समीक्षा

लोक कला एक ऐसी परंपरागत कला के रूप में स्थित है जिसकी जड़ें हमारी संस्कृति के साथ आरंभ से ही जुड़ी रहे। लोक कला आदिकाल से लोक जीवन का अभिन्न अंग रही है। इसका सदा से सामूहिक सृजन होता रहा है। लेकिन विगत वर्षों में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप लोग जीवन में पृथक्ता के चिन्ह दिखाई पड़ने लगे हैं। मनुष्य द्वारा किए जाने वाले सभी क्रियाएं जिसमें सुंदर अनुभूति और लोकमंगल की भावना है वे लोग कला की श्रेणी में आते हैं। एक तरह से तो हर मनुष्य कलाकार होता है और उसके अंतर्मन में कलाकारों सुकता अवस्था में निवास करता है, लोक कला उसे ही प्रभावी रूप से प्रेषित करती है और हमारी जन संस्कृति का विस्तार होता है।

हेमलता अग्रवाल (2016), के अनुसार वर्तमान आधुनिक युग में दृश्य कला की भांति लोक कलाओं का उन्मुक्त स्वरूप निरंतर प्रगति कर रहा है। परंतु वर्तमान युग मेंशास्त्रीय एवं आधुनिक कला पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है। नए माध्यमों और प्रयोगों पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है और उन्हें विकसित करने के लिए अनेकानेक संस्थान बनाएं और चलाए जा रहे हैं।इस प्रक्रिया में लोक कला पिछड़ते हुई नजर आ रही है या वह एक सजावट के रूप में उसका स्थान रह गया है।

स्तुति पांडेय (2002), ने लोक कला में रंगोली की परंपरा पर ध्यान खींचा है और इससे भारत की भौगोलिक, राजनैतिक, आर्थिक और समाजिक परिस्थितियों से जोड़ा है। वे भारतीय लोक कला को संस्कृति का अभिन्न अंग मानती हैं जिसमें चित्रकला का महत्वपूर्ण स्थान है। एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के रूप में रंगोली आज भी

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

हमारे जीवन और सांस्कृतिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण हिस्सा बनी हुई है। यह गतिविधियां हमारे लोक कला को बल प्रदान करती हैं और हमारी कलात्मक अभिव्यक्ति को लोक कला के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं।

नीता कुमार (2016), के अनुसार समकालीन कला में लोक तत्वों की प्रयोगात्मक था बढ़ गई है और यह हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।लोकरंग जो सदियों पुरानी परंपरा चित्र तथा शिल्प में आंखें खोलती हैं और वह हमारी संस्कृति की धरोहर हैं।लोक कला की इन धरोहरों को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

आनंद लखटकिया (2016),समकालीन कला में यामिनी राय के चित्रों में लोग तत्वों की प्रयोग पर ध्यान खींचा है। यामिनी राय के चित्र में लोक तत्वों का उपहार उन्हें राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करता है।यह लोक कला की परंपरा को समकालीन समय से जोड़ने का अनूठा प्रयोग है जिसमें लोक कला की भाषा व तत्व और भी सारगर्भित रूप से दिखाई पड़ते हैं। लोक कला के साथ इसी प्रकार के प्रयोगों को करने की आज जरूरत है।

गीता मेहरा (2016), ने समकालीन कला में लोग तत्वों की प्रयोगात्मकता पर लिखा है कि लोक कला जनसाधारण की भाषा होते हुए आज उसका व्यापक संदर्भ बन गया है।लोक कला में आदिम आग्रह प्रतीकों के माध्यम से उभरते हैं और इन्हीं प्रयासों के अनुरूप प्रतीक और बिम्ब विकसित होते है।आज के संदर्भ में लोक कला की धार थोड़ी अवरुद्ध होती हुई दिखाई पड़ रही है, जिसे हमें समकालीन जीवन से जोड़कर विकसित करना है और अपनी संस्कृति को प्रवाहमान बनाए रखना है।

उपयुक्त शोधार्थियों के वक्तव्य से यह प्रतीत होता है कि लोक कला हमारे जीवन से जीत है रूप में जुड़ी हुई है। यह हमारे आचार व व्यवहार में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है और इसी के बल पर हमारी संस्कृति में एक चमक बनी रहती है। इस प्रकार लोगों के लोक जीवन में जितने समृद्ध होगी उसी अनुपात में लोक कला व संस्कृति का विस्तार होगा। शोधार्थियों ने वर्तमान समय में लोक कला को समकालीन कला के प्रयोगों से जोड़ने पर बल दिया है और लोक कला रूपों पर विशेष रुप से ध्यान देने की बात कही है अन्यथा हमारी संस्कृति पिछड़ जाएगी और हम पर बाहरी संस्कृति का प्रभाव बढ़ जाएगा।

शोध पत्र की उपादेयता

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने लोक कला के विभिन्न पक्षों पर समाज का ध्यानआकृष्ट करने की कोशिश की हैऔर यह बताया है की लोक कला हमारे जीवन को और हमारे सांस्कृतिक कर्म को मजबूत बनाने का एक सबल साधन है।इसलिए यह शोध पत्र उसके विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालती है। यह शोध पत्र लोक कला के विभिन्न रूपों का भी वर्णन करती है और उसके तकनीकी और कलात्मक पहलुओं का अध्ययन,मूल्यांकन और विस्तार से चर्चा करती है।वर्तमान समय में लोक कला में आई विसंगतियों के कारणोंपर भी यह शोध पत्र विस्तार से प्रकाश डालती है और उनसे प्रकट होने वाली समस्या के निदानपर भी ध्यान आकृष्ट करती है।यह शोध पत्र मधुबनी और वारली लोक कला के अनेकानेकपक्षों पर विस्तार से चर्चा करती है और इसके माध्यम से लोक कला के वर्तमान स्थिति परपर्याप्त प्रकाश डालती है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

अनुसंधान क्रियाविधि

इस शोध पत्र की अनुसंधान क्रियाविधि वर्णनात्मक है जो अपने मूल प्रकृति में गुणात्मक रूप ग्रहण करती है।लोक कला के विभिन्न स्थितियों–परिस्थितियोंके विशद वर्णन हेतुयहवर्णनात्मक क्रिया विधि के विभिन्नशोध उपकरणों का इस्तेमाल करती है जिसमें सबसे महत्वपूर्णहै कलाकार और समीक्षकोंके साथ लोक कला पर विशेष रूप से चर्चा। यह चर्चा कई बार साक्षात्कार के रूप में की गई है और कई बार विषय को समझने के लिए चर्चा के रूप में है। शोधार्थी एक चित्रकार है इसलिए उसने अपने ज्ञानात्मक संवेदना और संवेदनात्मक ज्ञान का भी उपयोग एक शोध उपकरण के तौर पर किया है ताकि वह अपनी समझ को भी वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत कर सके।लोक चित्रों के विभिन्न आयामों को समझने के लिए इस शोध पत्र में सामग्री विश्लेषण शोध तकनीक का भी विस्तार पूर्वक प्रयोग किया गया हैताकि लोग कला केसौंदर्य और तकनीकी पक्ष को सफलतापूर्वक समझा जा सके और ठीक ढंग से लिखा जा सके।

मधुबनी चित्रकला

मधुबनी चित्रकला, यह एक लोक कला है इस की उत्पत्ति बिहार के मिथिला क्षेत्र के मधुबनी जिले से हुई है। इस चित्र कला का इतिहास अति प्राचीन है ऐसा माना जाता है कि राम–सीता विवाह के समय महिला कलाकारों से इसे बनवाया गया था। इसे बचाए रखने में महिलाओं की ही अधिक भूमिका रही है, आज भी यह अधिकतर महिलाओं द्वारा ही बनाया जाता है। मधुबनी चित्रकला को शुरू में विभिन्न संप्रदाय द्वारा बनाया जाता था और बनाए जाने वाले चित्रों को पांच शैलियों में बाँटा गया था, जैसे कि तांत्रिक, कोहबर, भरनी, कटचन, और गोदनावर्तमान समय में लगभग सारी शैलियों का एक दूसरे में विलय हो गया हैं। समकालीन कलाकारों द्वारा इसमें और नवीनता लाने का प्रयास किया जा रहा हैं इसीलिए अब ये दीवार, कैनवास, हस्तनिर्मित, कागज एवं कपड़ों पर भी बनाई जाती हैं[2]। अधिकतर यह दीवारों पर ही बनाया जाता हैं। दीवारों पर बनाए गए चित्र को भित्ति चित्र कहा जाता है। भित्ति चित्र को समान्यतयाः तीन रूपों में दर्शाया जाता हैं।

- गोसनी घर (पूजा घर) की सजावट
- कोहबर घर (विवाहित जोड़ों का घर) की सजावट
- घर की बाहरी दीवारों की सजावट

आज के समय में व्यवसायिक या फिर अधिक से अधिक लोगों तक इस कला को पहुंचाने के उद्देश्य से कपड़े एवं कागज पर भी चित्रांकन की प्रवृत्ति बढ़ी है। इन चित्रों में प्रयोग किए जाने वाले रंग अधिकांश वनस्पतियों और घरेलू चीजों से ही बनाया जाता है जैसे कि हल्दी, केले के पत्ते, पीपल की छाल इत्यादि। इस चित्रकला में अधिकतर हरा, पीला, नीला, केसरिया, लाल, बैंगनी आदि रंगों का इस्तेमाल होता है। वर्तमान में इस कला की लोकप्रियता राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खूब बढ़ रही है। इस कला को संरक्षित करने तथा इस में नवीनता लाने के लिए बहुत सारे नए कलाकारों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसके लिए कई प्रशिक्षण तथा बिक्री केन्द्रों की स्थापना की गई है। आये दिन राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लगातार प्रदर्शनियाँ आयोजित की जा

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

रही हैं। मधुबनी चित्रकला आज लोकल से वैश्विक हो चुकी है और इसका कारण यह हैकि वह विविधतापूर्ण विषयों को सहजतापूर्वक अभिव्यक्त करने में सफल रही है।

चित्र–2, Retrieved 10 April 2021 from https://artbaselearndrawing.blogspot.com/2020/10/warlipainting.html)

वारली चित्रकला

वारली एक प्रकार की जनजाति है, जो महाराष्ट्र राज्य के थाने जिले के धानु, तलासरी एवं ज्वाहर तालुकाज में मुख्यतः दूसरी जनजातियों के साथ पायी जाती है। ये बहुत मेहनती और कृषि प्रधान लोग होते है, जो बास, लकड़ी, घास एवं मिट्टी के बनी टाइलस से बनी झोपड़ियों में रहते हैं। झोपड़ियों की दीवारे लाल काडू मिट्टी एवं बांस से बांध कर बनाई जाती है, दीवारों को पहले लाल मिट्टी से लेपा जाता है उसके बाद ऊपर से गाय के गोबर से लिपाई की जाती है। वारली चित्रकला एक प्राचीन भारतीय कला है जो कि महाराष्ट्र की एक जनजाति वारली द्वारा बनाई जाती है। यह कला उनके जीवन के मूल सिद्धांतों को प्रस्तुत करती है। इन चित्रों में मुख्यतः फसल पैदावार ऋतु, शादी, उत्सव, जन्म और धार्मिकता को दर्शाया जाता है। यह कला वारली जनजाति के सरल जीवन को भी दर्शाती है। वारली कलाओं के प्रमुख विषयों में शादी का बड़ा स्थान हैं। शादी के चित्रों में देव, पक्षी, पेड़, पुरुष और महिलायें साथ में नाचते हुए दर्शाए जाते हैं[4]।

वारली चित्रकला मुख्यतः प्राकृतिक रंग का इस्तेमाल करके बनायीं जाती है। इसमें पेड़ की टहनियां, मिट्टी और गोबर के मिश्रण से दीवारे बनायीं जाती है उसके बाद लाल गेरू से दीवारे रंगी जाती है, यह वारली कला का पृष्ठभूमि होता है। उसपर चित्र बनाने के लिए सफेद रंग इस्तेमाल किया जाता है। यह रंग चावल के पाउडर से और खड़िया से बनायी जाती है। ब्रश के लिए दांतोसे चबाई हुयी बांस की लचीली लकड़ी का इस्तेमाल करते हैं। वारली पेंटिंग में प्रकृति से ही रूप लिए जाते हैं, जैसे– सूरज, चाँद, पहाड़, पेड़, जानवर, पंछी और रोजाना जिन्दगी के प्रसंग जैसे शिकार, मछलियां पकड़ना, त्यौहार–उत्सव, खेती, नृत्य ऐसे चित्र होते हैं। उनके चित्रों में रेखाएं, गोलाकार, त्रिकोण या चौरस के आकार होते है। पृष्ठभूमि में गेरू रंग और चित्रों में सफेद रंग की वजह

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

से वारली पेंटिंग्स बहुत ही आकर्षक और सुन्दर दिखते हैं। उनके मानव आकृतियां दो त्रिकोण जोड़कर बनाई जाती है ऊपर का त्रिकोण धड़ और नीचे का त्रिकोण कमर का निचला भाग रहता है, उनका सर गोलाकार होता है और हाथ–पैर पतली रेखा की होती है। पहले तो यह कला 1870तक सिर्फ उन जमाती की महिला ही वारली चित्रकला घर में बनाती थी और सिर्फ घर तक सीमित थी। लेकिन 'दिव्या सोमा' जैसे अनेक कलाकारों ने वारली चित्रकला को एक विशिष्ठ कला का दर्जा दिया। दिव्या सोमा को इस कला के लिए 'पद्मश्री पुरस्कार' से नवाजा गया है और 1870 के दशक से कुछ अन्य कलाकारों की वजह से वारली चित्रकला दुनिया के सामने आ गयी[3]।

लोक चित्रकला और वर्तमान संदर्भ

वर्तमान सदी में जीवन यांत्रिक होता जा रहा है। सभी मानव अपने जीवन के विकास हेतु पलायन कर रहे हैं। कोविड–19 की महामारी ने इस पलायन पर और परवासी मजदूरों के सवाल के व्यापक विमर्श में डाल रखा है और महंगाई विकराल रूप लेती जा रही है, शिक्षा और उद्योग–धंधे का बड़े पैमाने पर निजीकरण हो रहा है। ऐसे में लोक चित्रकला और उसका सहज प्रवाह बाधित हुआ है। चुकि सामाजिक संरचनायें टूट रही है, गाँव निर्बल पड. रहे हैं और लोक को सहेजने और विकसित करने वाले कलाकार व कलाकार जातियाँ अपने जीवन चलाने की नई चुनौतियों से दो–चार हो रहे हैं। ऐसे में कलाकारों को व्यापक सामाजिक सहयोग की जरूरत है। सरकारों और गैर सरकारी संस्थाओं को आगे आने की जरूरत है ताकि लोक कला के भीतर फिर से प्राण का संचार किया जा सके। मधुबनी और वारली जैसी कम ही लोक कला रूप हैं, जो अपनी परंपरा को बचाने में सफल हो रही हैं। ऐसी अनेकानेक लोक चित्रकला रूप हैं जो अपने अस्तित्व को बचाए रखने का संघर्ष कर रही हैं। जरूरत है समाज का शहरों की ओर पलायन को रोका जाय और गाँव की सामाजिक ताने–बाने को मजबूत बनाया जाय।

समाहार

लोक चित्रकला, संस्कृति की प्रवाहक रही है और इस कला रूप ने हमारे जीवन को सरस बनाए रखा है। एक ओर जहां बिहार की मधुबनी कला अलंकरण व धार्मिक विषयों को अपनी सृजनशीलता के केंद्र में रखती हैं तो दूसरी ओर वारली जैसी कला समाज के विभिन्न संभावनाओं को विस्तार देती है। जीवन की विभिन्न संभावनाओं को अभिव्यक्त करना और उसको आकार देना ही लोक कला की खासियत है, क्योंकि यह सहज रूपकारों में सृजित होती है। जीवन और समाज के विशिष्ट उत्सवों के साथ जुड़ी रहती है और समाज के ऊब को भी समय–समय पर आकार देती है। लोक में समूची सृष्टि का समागम है, यांत्रिक जीवन और कार्य–कलापों से दूरी है जो हमें आज की परिस्थिति में भी बचाए और चलाये रख सकती है। इसलिए लोक कला व लोक चित्रकला के रूप को बचाए और विकसित करने की जिम्मेवारी समाज और सत्ता के ऊपर है तभी हमारा जीवन भी सरस व सार्थक हो।

संदर्भ सूची

[1]Bhuvaneshwar Kaushik (22 Sepetember 2017). कला क्या है? कला का महत्व!. Retrieved 10 April 2021 from https://artinfohindi.wordpress.com/

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

[2] SHAKEEL ANWAR (Jul 24, 2018 18:21 IST).भारतीय लोक चित्रकलाओं की सूची.Retrieved 10 April 2021 from https://wonderhindi.com/madhubani-painting/

[3] वारली चित्रकला (2020). Retrieved 15 April 2021 from https://ahttps://amp.ww.in.freejournal.org/487198/1/.html

[4] okjyh fp=dyk /warli painting (October 11, 2020).Retrieved 10 April 2021 fromhttps://artbaselearndrawing.blogspot.com/2020/10/warlipainting.html)

[5] चित्र–1, पदमश्री सीता देवी, किहबर, मधुबनी चित्रकला, 2016retrieved 19 April 2021 fromhttps://commons.wikimedia.org/wiki/File:Kohbar_of_Mithila.png#/media/File:Kohbar_of_Mithila.png

[6] चित्र–2, Retrieved 10 April 2021 from https://artbaselearndrawing.blogspot.com/2020/10/warlipainting.html)

[7] राकेश कुमार (2018), समकालीन कला में लोक तत्व का निरूपण retrieved 10 March 2021fromhttp://dbrau.org.in/attachment/RakeshKumar.pdf